॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

अथर्ववेदीय

सूर्योपनिषद्

शान्तिपाठ

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः॥
स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥
ॐ शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!

आदित्यकी सर्वव्यापकता; सूर्यमन्त्रके जपका माहात्म्य

हरिः ॐ। अब सूर्यदेवतासम्बन्धी अथर्ववेदीय मन्त्रोंकी व्याख्या करेंगे। इस सूर्यदेवसम्बन्धी अथर्वाङ्गिरस-मन्त्रके ब्रह्मा ऋषि हैं। गायत्री छन्द है। आदित्य देवता हैं। **'हंसः'** **'सोऽहं'** अग्नि नारायणयुक्त बीज है। हल्लेखा शक्ति है। वियत् आदि सृष्टिसे संयुक्त कीलक है और चारों प्रकारके पुरुषार्थोंकी सिद्धिमें इस मन्त्रका विनियोग किया जाता है। छः स्वरोंपर आरूढ बीजके साथ, छः अङ्गोंवाले, लालकमलपर स्थित, सात घोड़ोंवाले रथपर सवार, हिरण्यवर्ण, चतुर्भुज तथा चारों हाथोंमें क्रमशः दो कमल तथा वर और अभय मुद्रा धारण किये, कालचक्रके प्रणेता श्रीसूर्यनारायणको जो इस प्रकार जानता है, निश्चयपूर्वक वही ब्राह्मण (ब्रह्मवेत्ता) है। 'जो प्रणवके अर्थभूत सच्चिदानन्दमय तथा भूः, भुवः और स्वःरूपसे त्रिभुवनमय हैं, सम्पूर्ण जगत्की सृष्टि करनेवाले उन भगवान् सूर्यदेवके सर्वश्रेष्ठ तेजका हम ध्यान करते हैं, जो हमारी बुद्धियोंको प्रेरणा देते रहते हैं।' भगवान् सूर्यनारायण सम्पूर्ण जङ्गम तथा स्थावर जगत्के आत्मा हैं, निश्चयपूर्वक सूर्यनारायणसे ही ये भूत उत्पन्न होते हैं। सूर्यसे यज्ञ, मेघ, अन्न (बल-वीर्य) और आत्मा (चेतना)-का आविर्भाव होता है। हे आदित्य! तुमको हमारा नमस्कार है। तुम्हीं प्रत्यक्ष कर्मकर्ता हो, तुम्हीं प्रत्यक्ष ब्रह्म हो, तुम्हीं प्रत्यक्ष विष्णु हो, तुम्हीं प्रत्यक्ष रुद्र हो। तुम्हीं प्रत्यक्ष ऋग्वेद हो। तुम्हीं प्रत्यक्ष यजुर्वेद हो, तुम्हीं प्रत्यक्ष सामवेद हो। तुम्हीं प्रत्यक्ष अथर्ववेद हो। तुम्हीं समस्त छन्दःस्वरूप हो। आदित्यसे वायु उत्पन्न होता है। आदित्यसे भूमि उत्पन्न होती है, आदित्यसे जल उत्पन्न होता है। आदित्यसे ज्योति (अग्नि) उत्पन्न होती है। आदित्यसे आकाश और दिशाएँ उत्पन्न होती हैं। आदित्यसे देवता उत्पन्न होते हैं। आदित्यसे वेद उत्पन्न होते हैं। निश्चय ही ये आदित्य देवता ही इस ब्रह्माण्ड-मण्डलको तपाते (गर्मी देते) हैं। वे आदित्य ब्रह्म हैं। आदित्य ही अन्तःकरण अर्थात् मन, बुद्धि, चित्त और अहङ्काररूप हैं। आदित्य ही प्राण, अपान, समान, व्यान और उदान—इन पाँचों प्राणोंके रूपमें विराजते हैं। आदित्य ही श्रोत्र, त्वचा, चक्षु, रसना और घ्राण—इन पाँच इन्द्रियोंके रूपमें कार्य कर रहे हैं। आदित्य ही वाक्, पाणि, पाद, पायु और उपस्थ—ये पाँचों कर्मेन्द्रिय भी हैं। आदित्य ही शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध—ये ज्ञानेन्द्रियोंके पाँच विषय हैं। आदित्य ही वचन, आदान, गमन, मल-त्याग और आनन्द—ये कर्मेन्द्रियोंके पाँच विषय बन रहे हैं। आनन्दमय, ज्ञानमय और विज्ञानमय आदित्य ही हैं। मित्रदेवता तथा सूर्यदेवको नमस्कार। प्रभो! मृत्युसे मेरी रक्षा करो। दीप्तिमान् तथा विश्वके कारणरूप सूर्यनारायणको नमस्कार है। सूर्यसे सम्पूर्ण चराचर जीव उत्पन्न होते हैं, सूर्यके द्वारा ही उनका पालन होता है और फिर सूर्यमें ही वे लयको प्राप्त होते हैं। जो सूर्यनारायण हैं, वह मैं ही हूँ। सविता देवता हमारे नेत्र हैं तथा पर्वके

द्वारा पुण्यकालका आख्यान करनेके कारण जो पर्वतनामसे प्रसिद्ध हैं, वे सूर्य ही हमारे चक्षु हैं। सबको धारण करनेवाले धाता नामसे प्रसिद्ध वे आदित्यदेव हमारे नेत्रोंको दृष्टिशक्ति प्रदान करके धारण करें।

(श्रीसूर्यगायत्री) 'हम भगवान् आदित्यको जानते हैं—पूजते हैं, हम सहस्र (अनन्त) किरणोंसे मण्डित भगवान् सूर्यनारायणका ध्यान करते हैं; वे सूर्यदेव हमें प्रेरणा प्रदान करें।*' पीछे सविता देवता हैं, आगे सविता देवता हैं, उत्तर—बायें भी सविता देवता हैं और दक्षिण भागमें भी (तथा ऊपर-नीचे भी) सविता देवता हैं। सविता देवता हमारे लिये सब कुछ प्रसव करें (सभी अभीष्ट वस्तुएँ दें)। सविता देवता हमें दीर्घ आयु प्रदान करें। '**ॐ**' यह एकाक्षर मन्त्र ब्रह्म है। '**घृणिः**' यह दो अक्षरोंका मन्त्र है, '**सूर्यः**' यह दो अक्षरोंका मन्त्र है। '**आदित्यः**' इस मन्त्रमें तीन अक्षर हैं। इन सबको मिलाकर सूर्यनारायणका अष्टाक्षर महामन्त्र—'**ॐ घृणिः सूर्य आदित्योम्**' बनता है। यही अथर्वाङ्गिरस सूर्यमन्त्र है। इस मन्त्रका जो प्रतिदिन जप करता है, वही ब्राह्मण (ब्रह्मवेत्ता) होता है, वही ब्राह्मण होता है। सूर्यनारायणकी ओर मुख करके जपनेसे महाव्याधिके भयसे मुक्त हो जाता है। उसका दारिद्र्य नष्ट हो जाता है। सारे दोषों—पापोंसे वह मुक्त हो जाता है। मध्याह्नमें सूर्यकी ओर मुख करके इसका जप करे। यों करनेसे मनुष्य सद्यःउत्पन्न पञ्च महापातकोंसे छूट जाता है। यह सावित्री विद्या है, इसकी कहीं कुछ भी प्रशंसा न करे। जो महाभाग इसका प्रातः पाठ करता है, वह भाग्यवान् हो जाता है, उसे गौ आदि पशु प्राप्त होते हैं, वेदार्थ-ज्ञानकी प्राप्ति होती है। तीनों काल इसका जप करनेसे सैकड़ों यज्ञोंका फल प्राप्त होता है। जो सूर्यदेवताके हस्त नक्षत्रपर रहते समय (अर्थात् आश्विनमासमें) इसका जप करता है, वह महामृत्युसे तर जाता है; जो इस प्रकारसे जानता है, वह भी महामृत्युसे तर जाता है।

॥ अथर्ववेदीय सूर्योपनिषद् समाप्त ॥

शान्तिपाठ

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः॥
स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥

ॐ शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!

जगत्की दुःखमयता और आनन्दमयता

अज्ञस्य दुःखौघमयं ज्ञस्यानन्दमयं जगत्।
अन्धं भुवनमन्धस्य प्रकाशं तु सुचक्षुषाम्॥

(वराहोपनिषद् २२)

जैसे अन्धेके लिये जगत् अन्धकारमय है और अच्छी आँखोंवालेके लिये प्रकाशमय है, वैसे ही अज्ञानी (जगत्को भगवान्से रहित विषयमय देखनेवाले)-के लिये जगत् दुःखोंका समूहमय है और ज्ञानी (समस्त जगत्में भगवान्से पूर्ण देखनेवाले)-के लिये आनन्दमय है।

---

* 'आदित्याय विद्महे सहस्रकिरणाय धीमहि। तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्।'